

प्रसामारण

EXTRAORDINARY

भाग II—सन्द्र 3—उपसन्द्र (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 61]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 31, 1972/माथ 11, 1893

No. 61]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 31, 1972/MAGHA 11, 1893

इस भाग में भिन्न पृथ्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह श्रसण संकलन के कप में एका जा सके । Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

ORDER

New Delhi, the 31st January 1972

S.O. 78(E)/15/IDRA/72(1).—Whereas the industrial undertaking known as Messrs. Indian Rubber Manufacturers Limited, Calcutta, is engaged in the Scheduled Industry, namely, Rubber Goods Industry;

And whereas the Central Government is of the opinion that there has been a substantial fall in the volume of production in respect of the articles manufactured in the said industrial undertaking, for which, having regard to the economic conditions prevailing, there is no justification;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 15 of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), the Central Government hereby appoints, for the purpose of making a full and complete investigation into the circumstances of the case, a body of persons consisting of:—

Chairman

Shri A. Bose, Special Officer and Ex-Officio Secretary, Commerce and Industry Deptt., West Bengal Government.

Members

- Shri N. V. C. Rao, Industrial Adviser, Directorate General of Technical Development.
- 2. Shri M. K. Mukherjee, Sr. Deputy Accountant General, Calcutta.

The above body shall submit its report to the Central Government within a period of six weeks from the date of publication of this Order in the Official Gazette.

[No. F. 25(5)/72-PEC.]

K. S. BHATNAGAR, Jt. Secy.

श्रीयांगिक विकास मंत्राशय

मार्डेडा

नई दिल्ली, 31 जनवरी, 1972

कां भार 78 (भा) /15/मार्ष को भार ए०/72(1).--यतः वियन रवड़ मैन्यूफैक्चरपं लिमिटेड, कलकता नामक भौद्योगिक उपक्रम भनुमूचित छन्नोग भयीत् रबष्ट्र माल उद्योग में लगा है ;

भीर यतः, केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि उक्त भौद्योगिक उपक्रम में विनिर्मित वस्तुमों से सम्बन्धित उरगादन के परिमाण में सारतः गिरावट श्रा रही है ;

भतः अब उद्योग (विकास भीर विनियमन) भिधिनियम 1951 (1951 का 65) की धारा 15 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा इस मामले की परिस्थितियों में पूरी तरह से अन्वेषण करने के प्रयोजनार्थ एक निकाय नियुक्त करती है जिसमें निम्निसिखित व्यक्ति होंगें;

प्रधास

श्री ए० बोस, विशेष ग्रिधिकारी एव पटेन सचिव, वाणिज्य श्रीर उद्योग विभाग, पश्चिमी बंगल सरकार।

सबस्य

- श्री एन० वी० सी० राव,
 प्रौद्योगिक सलाहकार,
 तकनीकी विकास का महानिदेशालय।
- श्री एम० के० पृथाजी, ज्येष्ठ उप महाने बापाल, कानकत्ता ।

उपरोक्त निकाय राजपन्न में इस आदेण के प्रकाशन की तारीख से छः सप्ताह की श्रवधि के भीतर केन्द्रीय सरकार की अपनी रिपोर्ट पेश करेगा।

> [सं० फा॰ 25(5)/72-पी॰ ई॰ सी॰] के॰ एस॰ भटनागर, संयुक्त संचिव ।